दैनिक जागरण. भोपाल 8 OCT 2011

बेटी का संरक्षण, संपोषण और सम्मान

म.प्र. सरकार ने नवरात्रि की नवमी से बेटियों को बचाने का जन अभियान छेड़ा है। इस अभियान की शुरुआत मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने स्वयं कन्या पूजन कर किया। परम्परागत् नवमी पूजन के साथ ही पूरे प्रदेश में बेटी बचाओ अभियान प्रारंभ हो गया। अभियान शुरू करने का दिन भी उपयुक्त चुना। नवरात्र की नवमी पर देश भर में कन्या भोज करवाया जाता है हर जगह कन्या को आमंत्रण और उसका स्वागत सत्कार। वस्तुतः कन्या भोज की इस अवधारणा के पीछे स्त्री सम्मान का भाव है जो आज धार्मिक परम्परा तक सिमट कर रह गया है। दिनों दिन कन्याओं के घटते अनुपात के आँकड़े हमारे सामने हैं। तमाम कानून और प्रावधानों के बावजूद समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। पंजाब और हरियाणा में तो यह आँकड़ा घट कर क्रमशः 830 और 846 तक पहुँच गया है। मध्यप्रदेश में भी शिशु लिंगानुपात 912 होना चिंताजनक है। यह एक सामाजिक समस्या है, और इसका हल समाज से ही निकल कर आयेगा। इसीलिए प्रदेश के मुख्यमंत्री ने समाज के साथ मिलकर इसे हल करने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने इस कार्य को सामाजिक महाअभियान का स्वरूप दिया है।

यह अभियान तीन स्तर पर चलाया जायेगा। पहला बेटियों का संरक्षण। बेटियों के जन्म को लेकर उत्पन्न विसंगतियों को दूर करने के लिए कानूनों का कड़ाई से पालन कर उनके जन्म और जीवन की सुरक्षा की गारंटी की जिम्मेदारी। दूसरा बेटियों के संपोषण की व्यवस्था। तीसरा बेटियों का सम्मन। बेटियों के प्रति सम्मान भाव जागृत करने के लिए ही मुख्यमंत्री निवास पर नवमी को कन्या पूजन व भोज का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री निवास ही नहीं पूरे प्रदेश के हर जिले में प्रभारी मंत्री की उपस्थिति में नवमी को आयोजन सम्पन्न किये गये। संरक्षण, संपोषण और सम्मान तीनों स्तरों पर एक साथ बेटियों को बचाने का मध्यप्रदेश सरकार का अभियान सामाजिक अभियान बने इसकी पूरी कोशिश की जाना प्रदेश सरकार की ठोस पहल है।

बेटियों को बचाने का यह अभियान न केवल समय की जरूरत है बल्कि भविष्य में मानवता की हिफाजत के लिए भी जरूरी हैं। यदि जनसंख्या के लिंगानुपात में असंतुलन इसी तरह बना रहा तो समाज भविष्य में उसी आदिम नरसंहार की ओर बढ़ जायेगा जिसमें स्त्रियों को लेकर भयानक खून खराबे की दास्तानें दर्ज हैं। भविष्य में सामाजिक शांति सद्भाव और समरसता के लिए आवश्यक है कि समाज में स्त्री-पुरुष की आबादी में समानता हो। यह समानता बेटी को पहले दिन से ही बचाने के अभियान से संभव होगी। इसके लिए बेटी का संरक्षण बहुत जरूरी है।

> **संरक्षण, संपोषण और सम्मान तीनों स्तरों पर एक साथ बेटियों को बचाने का मध्यप्रदेश सरकार का अभियान सामाजिक अभियान बने इसकी पूरी कोशिश की जाना प्रदेश सरकार की ठोस पहल है।**

मुख्यमंत्रीजी का दूसरा घोष वाक्य बेटी के संपोषण से है। संपोषण एक बहुआयामी शब्द है इसके अंतर्गत शारीरिक पोषण, मानसिक पोषण, बौद्धिक पोषण, शैक्षणिक पोषण और व्यक्तित्व विकास के तमाम आयाम निहित हैं जो बेटी में नारी की पूर्णता को विकसित करते हैं। उसके मातृत्व स्वरूप को संस्थापित करते हैं। एक संपोषित बेटी ही आदर्श माँ हो सकती है और एक आदर्श माँ आदर्श समाज की नींव रखती है। आज संसार में जो भी सामाजिक विसंगतियाँ, विकृतियाँ या वर्जनाएँ दिख रही हैं उनमें कहीं न कहीं मातृत्व के गुणों का ह्रास सन्निहित है, जो संभवतः बेटी के उचित संपोषण के अभाव के कारण उत्पन्न हुआ है। यदि हम बेटी के संरक्षण के साथ उसके संपोषण का ध्यान रखें तो वह भविष्य में श्रेष्ठ नारी और आदर्श नारी के रूप में सामने आती है। मुख्यमंत्री जी का तीसरा घोष वाक्य है बेटी का सम्मान। मुख्यमंत्री द्वारा कहे गये ये तीनों शब्द संरक्षण, संपोषण और सम्मान एक दूसरे से जुड़े हैं। एक दूसरे के बिना इनकी सार्थकता संभव नहीं। बेटी की उपेक्षा होगी, उसका अपमान होगा, उसे हेय दृष्टि से देखा जायेगा, उसे कमतर आंका जायेगा तो उसका आत्मविश्वास विकसित नहीं होगा। आत्मविश्वास का अभाव या कुंठा का विस्तार बेटी की शिक्षा और समझदारी दोनों में बाधा डालेगी। बेटी के शिक्षित होने के लिए समझदार बनने के लिए और भविष्य के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए यह जरूरी है कि उसे पहले दिन से ही सम्मानित किया जाये। एक अच्छी बेटी के विकास के लिए उसका संरक्षण संपोषण और सम्मान इन तीनों भावों को समाज में मजबूत करने की जरूरत है। इन्हीं तीनों भावों का व्यवहारिक स्वरूप है बेटी बचाओ अभियान।

(लेखिका म.प्र. जन अभियान परिषद् में सलाहकार हैं)